ज्ञान प्रज्ञा

(भारतीय ज्ञान परंपरा/राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में विविध विमर्श)

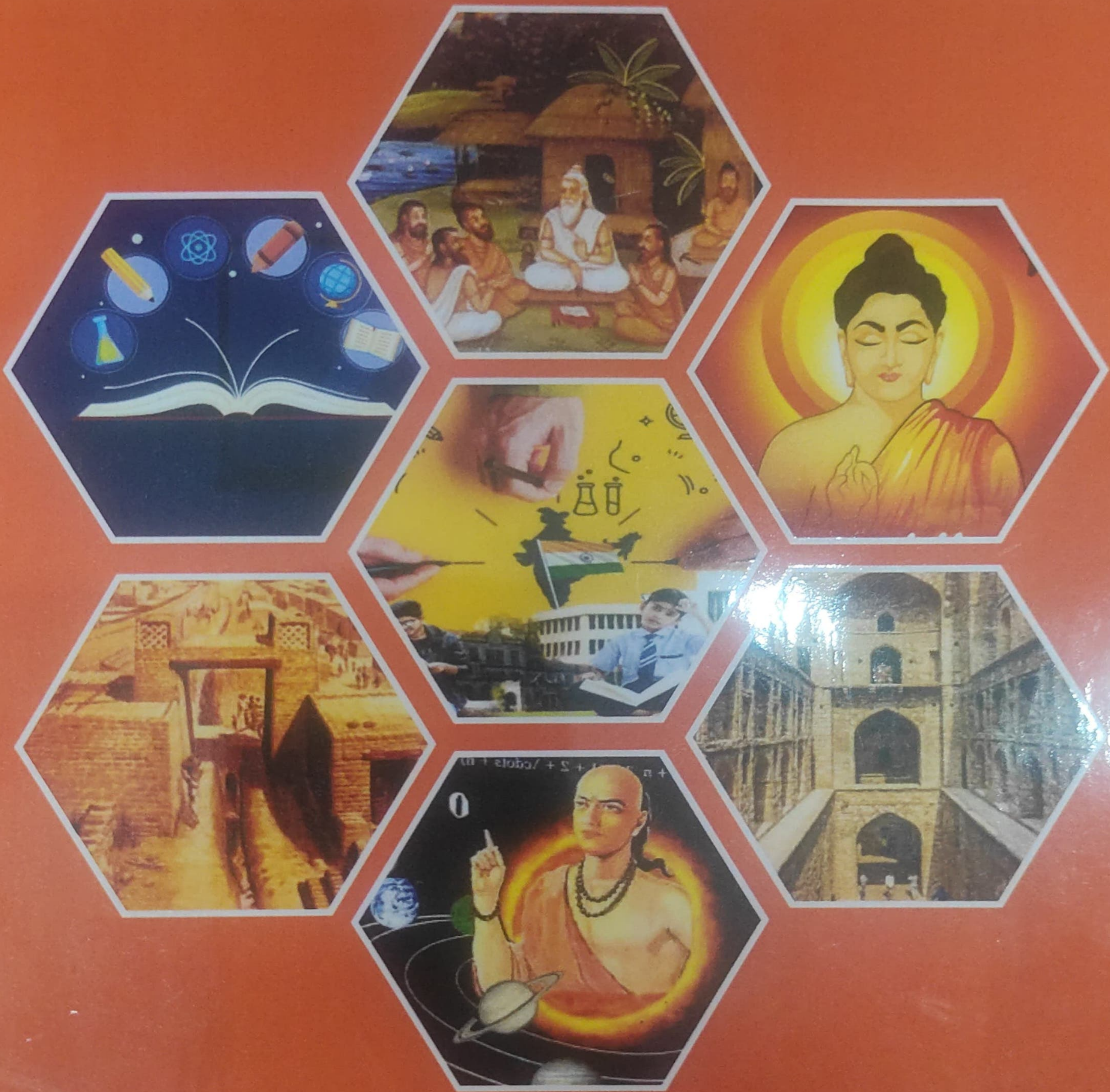

संपादक

संजय शर्मा 'वत्स'

ज्ञान प्रज्ञा

(भारतीय ज्ञान परंपरा/राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में विविध विमर्श)

संपादक
संजय शर्मा 'वत्स'

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेल: jtspublications@gmail.com

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

ज्ञान प्रज्ञा (भारतीय ज्ञान परंपरा/राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में विविध विमर्श)

संपादक

संजय शर्मा 'वत्स'

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२५

ISBN 978-93-49496-16-3

जे.टी.एस. पब्लिकेशन

बी–508 गली नं.17, विजय पार्क, दिल्ली –110053

मो. 08527460252,9990236819

ई मेल : jtspublications@gmail.com

ब्रांच ऑफिस : ए-9 नवीन इनक्लेव गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, पिन -201102

मूल्य : १२०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

अनुक्रमाणिका

क्र.	लेख का नाम /लेखक	पेज
1.	**प्राचीन ग्रंथ और ज्ञान परंपराएं वैदिक दर्शन और तात्विकता** संजय शर्मा 'वत्स'	15
2.	**परंपरागत भारतीय शिक्षा में गुरु-शिष्य सम्बन्ध** डॉ. जगदीश सिंह रावत	31
3.	**उपनिषद** डॉ. भुपेन्द्र कौर	35
4.	**श्री मद्भागवत गीता** डॉ. भुपेन्द्र कौर	45
5.	**भारत में शिक्षा और गिरते जीवन मूल्य** जितेन्द्र पायल	54
6.	**प्राचीन भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति** डॉ. अर्चना सिंह	63
7.	**भारतीय राजनीतिक विचार: शासन, कानून और राज्य कौटिल्य का अर्थशास्त्र** प्रशांत त्रिवेदी	66
8.	**भक्ति मीमांसा** डा०त्रिलोक चन्द	78
9.	**भारतीय योग परंपरा में ध्यान का स्वरूप** डॉ० अनुज कुमार	84
10.	**शिक्षक और विद्यार्थी का संबंध** श्रीमती मीना रवि	89
11.	**भारतीय मनोविज्ञान और भारतीय ज्ञान परम्परा** डॉ. मयुर वासुरभाई भम्मर	95

12. **योग और ध्यान मन शरीर आत्मा की प्रथाएँ भारतीय परम्परा में ध्यान विधियाँ प्राण और चक्रों का संकल्पना** 105

श्रीमती सुधा उपाध्याय

13. **अन्वेषण विषय : औषधीय पौधे और सूत्र** 114

मुनीश चौधरी

14. **वैदिक दर्शन और तात्विकता रू वेदोपनिषद में शिव तत्व की अवधारणा** 116

डा0 कुसुमलता रतूड़ी

15. **भारतीय ज्ञान परंपरा में महिलाओं की भूमिका: महिलाओं का योगदान और ज्ञान का संरक्षण** 121

हेमलता बलूनी

16. **प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली: शिक्षा की ऐतिहासिक नींव** 126

श्रीमती नीतू ठाकुर

17. **योग और ध्यान : मन, शरीर और आत्मा की प्रथाएं** 130

राकेश गुप्ता

18. **ज्ञान भक्ति व श्रद्धा और भक्ति आंदोलन** 133

आशीष कुमार त्रिपाठी

19. **भारतीय ज्ञान परंपरा में ,पर्यूषण पर्व में, समाहित सार्थक सकारात्मक संदेश** 136

आनंद कुमार जैन

20. **भारतीय ज्ञान परंपरा में प्राचीन ग्रंथों की बौद्धिक संपदा** 141

डॉ. अमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ

21. **विज्ञान पाठ्यचर्या में भारतीय लोक परम्पराएँ और ज्ञान प्रणालियों का समावेश** 149

निर्मल कुमार न्योलिया

22. **भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में हिमालय क्षेत्र की औषधीय वनस्पतियों का अध्ययन** 158

डॉ श्वेता मजगाई

23.	भारतीय ज्ञान परंपरा में अभिलेखों की भूमिका प्रीति शर्मा	171
24.	भक्ति और श्रद्धा का ज्ञान राजकुमार पाल	178
25.	लोकसाहित्य और मानव जीवन में उसके अध्ययन का महत्व डॉ. मंजुला श्रीवास्तव	189
26.	भारतीय परंपरा में नैतिक और दार्शनिक विचार: नैतिक कोड और उचित जीवन निष्ठा दीक्षित	195
27.	ग्लोबल वार्मिंग प्रवीण सिंह बिष्ट	201
28.	भारतीय प्राचीन शिक्षा प्रणाली और भारत में औपचारिक शिक्षा का प्रादुर्भाव डॉ. प्रीति मजगाई	204
29.	आचार्यश्री विद्यासागर के साहित्य में सामाजिक, सांस्कृतिक आयाम आनंद कुमार जैन	211
30.	भारतीय गणित और खगोलशास्त्र श्रीमती पूनम शुक्ला	219
31.	गुरु - शिष्य परम्परा जितेन्द्र प्रताप	228
32.	भारतीय गणित एवं खगोलशास्त्र : प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक उपलब्धियाँ सूर्या त्रिपाठी	231
33.	प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली: शिक्षा की ऐतिहासिक नींव डॉ नेहा अग्रवाल	236
34.	मध्यकाल में भक्ति और श्रद्धा का ज्ञान प्रशांत त्रिवेदी	240

35. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (विद्यालय शिक्षा 2020) 256
अंजू त्यागी

36. योग एवं ध्यान : मन शरीर आत्मा की प्रथाएँ 264
ज्योति जैन

37. भारतीय ज्ञान परम्परा में मूल्य-संस्कृति 270
डॉ. सुनीता उपाध्याय

38. ऐतिहासिक धरोहरः 'रजा पुस्तकालय' रामपुर 284
नीलम रानी सक्सैना

39. भारतीय दर्शन में कर्म: नैतिक संहिता और उचित जीवन पर इसके प्रभाव का एक विश्लेषण 286
जयन्त धर द्विवेदी

40. भारतीय दर्शन में मोक्षतत्त्व का निरूपण : काश्मीर शैवदर्शन के आलोक में 295
डॉ० प्रदीप

41. भारतीय रसोई घर में प्रयुक्त औषधीय पौधे और सूत्र 309
हरिमोहन गुप्ता

42. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय गुरुकुल शिक्षण परम्परा 313
डॉ० अरविन्द कुमार

43. आत्म तत्व में समाहित उपनिषद 320
माधुरी त्रिपाठी

44. मानसिक स्वास्थ्य में आयुर्वेदः एक प्राकृतिक चिकित्सा 323
रानी शशि दिवाकर

45. भारतीय संगीत और ध्वनि ज्ञान : ध्वनि के सौंदर्य शास्त्र और वैज्ञानिक पहलू 325
डॉ. प्रतिभा जायसवाल

46. भारतीय ज्ञान परंपरा : पर्यावरण संरक्षण की शान 336
पूजा चतुर्वेदी

47. **प्राचीन भारतीय चिंतन में पर्यावरण** 339

आरती चितकारिया 'अशेष'

48. **भारतीय पारिस्थितिकी ज्ञानः सतत जीवन और पर्यावरण ज्ञान** 348

सुनीता वर्मा

49. **भारतीय पौधे ज्ञान परंपरा के स्रोत** 351

सतेंद्र सिंह भण्डारी

50. **प्राथमिक स्तर पर भारतीय ज्ञान परंपरा की समझ जरूरी** 356

ठाट सिंह

4

श्री मद्भागवत गीता
SHRI MAD BHAGWAD GEETA

डॉ. भुपेन्द्र कौर
शिक्षाशास्त्र विभाग
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (यू0पी0)

प्रस्तावना—श्रीमदभागवत गीता भगवान कृष्ण के मुखारबिन्द से निकला हुआ सुमधुर गीत है। यह महाभारत के भीष्मपर्व का एक भाग है। इस पवित्रतम धार्मिक ग्रन्थ की रचना किन परिस्थितियों में हुई यह समझना आवश्यक है। अर्जुन युद्ध के लिए युद्धभूमि में उतरते है। रण में युद्ध के बाजे बज रहे हैं परन्तु अपने सगे संबन्धियों को युद्ध–भूमि में देखकर अर्जुन का ह्रदय भर जाता है। यह सोचकर कि मुझे अपने आत्मीयजनों की हत्या करनी होगी, वह किकंर्तव्यविमूढ और अनुत्साहित होकर बैठ जाता है। अर्जुन की अवस्था दयनीय हो जाती है। वह निराश हो जाता है। उसकी वाणी में रूदन है। वह कोरवों की हत्या नहीं करना चाहता है।

अर्जुन की यह स्थिति अध्यात्म जगत में आत्मा के अन्धकार की स्थिति कही जाती है। श्रीकृष्ण अर्जुन की इस स्थिति को देखकर उसे युद्ध करने का निर्देश देते है और यही निदेश ईश्वरीय वाणी है वे कहते हैं–

सर्व धर्मान परित्यज्य मामेक शरणं ब्रज।
अहं त्वं सर्व पापेभ्यों मोक्षयिष्यामि मा शुचः।। गीता

सभी पूर्वाग्रह को त्याग कर हे, पार्थ तू मेरी शरण में आ मै। तुझे सभी पापों से मुक्त कर दूगा। हे! पार्थ तू सोच मत कर। गीता का संदेश सार्वभौम है, यह हमारे जीवन में सबके ह्रदय में घटित होने वाला युद्ध ही है। आज प्रत्येक व्यक्ति जीवन में द्वन्द्व की स्थिति में है, गीता मनुष्य के जीवन को एक मोड दिखाती है। महात्मा गॉधी जह का कहना था–'जब मै निराशा से घिर जाता हू, जीवन में प्रकाश की कोई किरण नहीं दिखाई देती तो मैं गीता की शरण में जाता हूँ। उससे मुझे कोई न कोई ऐसी किरण मिल जाती है जो मेरे जीवन को प्रकाश प्रदान करती है।

श्री मद्भागवत गीता (नीतिशास्त्र)

भारतीय परम्परा के अनुसार गीता को उपनिषदों का सार तत्व माना गया है, तथापि कुछ आधुनिक लेखकों ने इसे विविध वैचारिक प्रवृत्तियो का सम्मिश्रण बताया है। एक रूप में गीता को मानव जाति का सर्वभौम नीतिशास्त्र माना जा सकता है। वैचारिक प्रवृत्तियों में बाहरी विविधताओं के बावजूद गीता उक अनोखा उददेश्य प्रदर्शित करता है और इसमें सिद्धान्त की दृष्टि से एकत्व है। जिसे व्यवहार में प्राप्त किया जा सकता है।

हमारा जीवन मानसिक दबावों व तनाव से भरा पडा है। यह पीडा, व्यथा, विशाद, क्लेश इत्यादि से आक्रान्त है। किसी भी परीक्षा कि घडी में हम विरोधी आवेगों के मध्य लडखडा जाते है, और यह निश्चय नहीं कर पाते की कौनसा मार्ग अपनायें अथवा क्या करें। वास्तव में मनुष्य की समस्या यह है कि जब परस्पर विरोधी आवेग हमारे समस्त प्रयत्नों को गतिहीन व अशक्त कर दे और हम अपने आप को पूर्ण अनिश्चित की स्थिति में पाये तो उस अवस्था में एक संतुलित जीवन कैसे बितायें? कैसे अपनी बृद्धि व मानसिक शान्ति को बनाये रखें? शोक और पीडा आदि को किस प्रकार शान्तिपूर्वक सहन करें, परीक्षा के क्षणों में शान्ति और ईमानदारी से अर्थात् अंतःकरण की आवाज के अनुकूल कार्य करें?

इन समस्याओं को हल करने के मार्ग पर चलते हुए गीता मानव–जीवन से संबंधित लगभग समस्या का समाधान है। समस्या यह है कि हम कर्मठ, तेजस्वी, उत्साही व रस पूर्ण जीवन कैसे व्यतीत करें? इन प्रश्नों के आशिंक रूप से उत्तर ढूंढने पर भारत में और पश्चिमी देशों मं बहुत से विचारको अथवा चिंतन पद्धतियों द्वारा प्रयत्न किये गये हैं, परन्तु गीता के सिवाय किसी एक दर्शन में अथवा किसी एक ग्रंथ में सम्पूर्ण समस्याओं का उत्तर नहीं मिलता। शुभ और अशुभ, अच्छाई अथवा बुराई अभी तक अनिर्णीत रही है, फिर भी मनुष्य को इसके नैतिक संघर्ष में जो चीजें थामे रहती है, वह है–उसका धर्मनिष्ठ विश्वास कि अंत में अच्छाई की बुराई पर विजय अवश्य होती है।

सभी भारतीय पद्धतियों के अनुसार मुसीबत तथा संघर्ष, हर्ष और पीडा इत्यादि वेदनाएँ 'संसार' के अभिन्न लक्षण है। संसार व्युत्पतीय दृष्टि से जीवन, मरण व पूनर्जन्म के चक्कर के रूप निरन्तर घूमने वाली प्रक्रिया का नाम है। यह संभावना की अनादि और अनंत प्रक्रिया है। मानव प्राणी के सुख–दुखात्मक अनुभव इस संसार में प्रतिभागित्व के कारण उसकी इसके साथ अपने एकात्मीकरण या

तादात्मक के कारण होते हैं। जीवन की इस प्रक्रिया के कारण व्यक्ति अपने नैसर्गिक स्वभाव गुणातीतत्व का अतिक्रमण कर बैठता है। यह उल्लंघन उस तथ्य को न जानने के कारण है कि 'मैं स्वयं क्या हूँ?' यह व्यक्ति का प्रारम्भिक अज्ञान है, जिसे उसका अकरण या अनाचरण का दोष कहेगें। दूसरी प्रकार से उलंघन वह तब करता है, जब वह स्वयं का इस सांसारिक प्रक्रिया के साथ पूर्ण एकात्मीकरण कर बैठता है, इसे ही अपना जीवन कहता है, और तदानुसार उसमें जीता है। यह उसका कारण दोष या उसका अनाचरण दोष कहलाता है।

गीता का ध्यान पूर्वक अध्ययन करने पर हमें पता चलता है कि कर्तव्य का कोई भी सिद्धान्त अर्जुन को इस दलदल से कोई बाहर नहीं निकाल पा रहा है। उसे क्या करना चाहिए, उसका अन्तिम निर्णय वह यथार्थ के उस ज्ञानोदय से प्राप्त करता है जो उसके धर्म तत्वज्ञ दिव्य गुरू से मिलता है। यथार्थ स्थिति का ज्ञान उसकी अनिर्णय अथवा गलत निर्णय की स्थिति पर काबू पाने में सहायता करता है। उसे उसके वास्तविक कर्तव्य का बोध कराता है एवं प्रायोगिक निर्णयों का स्त्रोत व सैद्धान्तिक ज्ञान होता है।

हमें सुख की अनुभूति हमारे इस ब्रह्माण्डीय प्रवाह में प्रतिबंधित भागीदारी के कारण होती है। ऐसी स्थिति में प्रासंगिक किसी समस्या के समाधन के लिए गीता व्यक्ति को निष्काम कर्म का आदेश देती है। यह ऐसा कर्म है, जो परिस्थिति के अनुकूल किसी भी कर्मफल की इच्छा किए बिना मनोवेग रहित ढंग से किया हो। कोई भी मानवकर्का, जो मुक्ति की इच्छा रखता हो अधिकार क्षेत्र उन कार्यो तक सीमित होता है, जो निस्वार्थ भाव से और किसी भी अवस्था में इन कर्मफलों के उपभोग की इच्छा न हों। अद्वैत वादियों की भॉति यह ज्ञानयोगियों का मार्ग है। गीता असाम्प्रदायिक है। सभी मानव बुराइयों के उत्कृष्ट समाधान के लिए इसकी निष्काम कर्म की संतुति सभी व्यक्तियों के लिए और बिना किसी धार्मिक अथवा सांस्कृतिक सम्बंध का ध्यान रखें सभी मानव संदर्भो में प्रभावी है। इस अर्थ में गीता एक सार्वभौम नीतिशास्त्र होने का दावा करती है। मानव क्षमताऍ अलग–अलग व्यक्तियों की अलग–अलग होती है। इस हेतु व्यक्तिक भावनाओं का दमन कर निष्काम भाव की अभिवृत्तियो का विकास करे। इसी उददेश्य की प्राप्ति हेतु ऐसे व्यक्तियों के लिए गीता एक अलग मार्ग बताती है, वह मार्ग बताती है, वह मार्ग 'भक्ति' मार्ग है। यह अहम्भाव तथा वैयक्तिक भाव से ईश्वर के प्रति आत्म–समर्पण करके छुटकारा पाने का मार्ग है।

गीता अपने निष्काम कर्म के संदेश के बाद उपनिषद पर एक उपयुक्त टीका है। इसमें यह विशेष है कि अट्ठारह अध्यायों में से प्रत्येक अध्ययन को किसी न किसी प्रकार का योग कहते हैं। गीता विशाद योग से आरम्भ होती है जिसमे विशेष रूप से एक ऐसी मानव स्थिति को प्रस्तुत किया गया है, जो तनाव, संदेह व आशंका, नैराश्य और अनिश्चितता से परिपूर्ण है। इसका समाधान मोक्षयोग के विवेचन से होता है, जो अन्तिम रूप से तनाव मुक्त करता है, संदेश को दूर करता है, रहस्य को सुलझाता है और शान्ति का मार्ग प्रशस्त करता है।

गीता के अनुसार शिक्षा का अर्थ

श्रीकृष्ण के अनुसार सच्ची शिक्षा का अर्थ गुणों के ज्ञान का अवबोध है। गृणों का ज्ञान वह है, जिसके द्वार हम एकता में अनेकता का अनुभव करते हैं। वह हर प्राणी में ईश्वर का आभाश मानते है। गीतादर्शन के अनुसार हम कह सकते हैं, कि 'वास्तविक शिक्षा वह है' जो हमें इस योग्य बनाती है कि हम प्राणी की आत्मा में ईश्वर की सत्ता ही देखें।' आरम्भ में जब अर्जुन युद्ध के प्रति भ्रमित था, तब श्रीकृष्ण ने अपने ब्रह्मरूप को दिखाकर जिसमें सबका वास था, अर्जुन को यह अनुभव कराया, कि युद्ध में वह किसी की आत्मा को नहीं मार सकता क्योंकि आत्मा का वास्तविक वास तो ब्रह्म में है।

गीता के अनुसार शिक्षा के उददेश्य

आदर्शवादिता की उच्चतम सीढी के आधार पर भगवदगीता के अनुसार शिक्षा के उददेश्य निम्न प्रकार से वर्णित किये जा सकते है।

1. **जीवन का चरम लक्ष्य मोक्षः** मानव ज्ञान की उस स्थिति को सर्वोपरि माना गया है जब आत्मा, परमात्मा में विलीन होकर मोक्ष को प्राप्त कर ले। गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन के माध्यम से शिक्षा के इस पावन एवं उच्चतम उददेश्य की ओर संकेत किया है। ज्ञान का आदान–प्रदान इस स्तर का हो कि व्यक्तिमोक्ष प्राप्ति को ही जीवन का लक्ष्य माने, तथा उसे प्राप्त करने में अपना सर्वस्व लगा दे।

2. **नैतिकता पूर्ण जीवनः** अर्जुन के माध्यम से श्रीकृष्ण द्वारा समझना कि अनैतिक समाज को उत्साह देने से बडा कोई पाप नहीं है। यह अनैतिक पीढी सारे राष्ट्र को खण्डित कर देगी। इस प्रकार श्रीकृष्ण नैतिक आचरण करने की प्रेरणा तथा अनैतिकता के प्रति युद्ध लडना, से यही सीख देता है कि समाज व राष्ट्र के उत्थान के लिए नैतिकता पूर्ण आचरण ही स्वीकार्य होना चाहिए।

3. **निर्लिप्त भाव से जीवन यापनः** हर व्यक्ति एक आत्मा है जो अकेला आया है व अकेला जाएगा। वह परमात्मा का अंश है। उसे मोहमाया में नहीं फंसना चाहिए। स्वंय की सत्ता को जानकर अपने अन्तिम लक्ष्य, मोक्ष प्राप्ति के लिए निर्लिप्त भाव से ज्ञानार्जन करना चाहिए।

4. **आत्मा की अमरता के ज्ञान का उददेश्यः** आत्मा अजर–अमर है। उसे तो न शस्त्र भेद सकता है न आग जला सकती है, न पानी गला सकता है, न हवा सोख सकती है, मरता तो केवल शरीर है। अतः शिक्षा ऐसी हो जो व्यक्ति को हर अन्याय व अत्याचार से निर्भीकता पूर्वक साहस से लडने के योग्य बना सके। वह मृत्यु भय से मुक्त होकर हर अन्याय का सामना कर सके।

5. **आत्मा बल बढाने का उददेश्यः** गीता की शिखा का उददेश्य है कि व्यक्ति जगत में रहते हुए अपनी शक्ति का इस प्रकार प्रयोग करे कि सज्जनों की रक्षा हो व दुष्टों का नाश हो। सत्धर्म की स्थापना हो। अतः गीता मनुष्य के वास्तविक विकास के लिए आत्मबल का संचार करती है।

6. **जीवन में पलायन न करके चुनौतियों का सामना करने की भावना का विकासः** व्यक्ति को जीवन में न तो दीनता दिखानी है, न किसी परिस्थिति से भागना है उसे उठकर सामना करना है क्योंकि जब तक आयु है उसे कोर्द नहीं मार सकता, वैसे मरता तो केवल शरीर ही है आत्मा नहीं। इस प्रकार भगवदगीता के शिक्षा के उददेश्य मानव को कर्म में प्रवृत कर उसे आत्म विकास की प्रेरणा देते हुएअनाचार से लडकर, अपने चारों ओर न्याय व सदगुण के प्रचार व प्रसार को प्रोत्साहित कीते हैं। इसमें वैयक्तिक एवं सामाजिक उददेश्यों का सुन्दर समन्वय है।

शिक्षा का पाठ्यक्रम

भगवदगीता में प्रश्नोत्तरों द्वारा ऐसा पाठ्यक्रम प्रज्ञतुत किया गया हैं, जो परा ज्ञान व अपरा ज्ञान से प्राणी को अवगत कराता है। अमूर्त व मूर्त ज्ञान की प्राप्ति के लिए शिक्षा में साहित्य, सामाजिक, धार्मिक व वैज्ञानिक विषयों का अध्ययन आवश्यक है। भौतिक ज्ञान के

साथ–साथ आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति भी व्यक्ति के लिए नैतिक जीवन जीने हेतु आवश्यक है।

परा विद्या के अर्न्तगत–आत्म ज्ञान, ब्रह्म ज्ञान आता है जो नित्य व सनातन है, पूर्ण ज्ञान है, नीतिपूर्ण ज्ञान व आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त प्राप्त करते समय छात्र की अपूर्णता व अस्थिरता की ओर भी ध्यान आकृष्ट करना चाहिए ताकि छात्र में सदगुणों का उदय हो। वह सही व गलत में भेद कर सके।

अपरा विद्या के अर्न्तगत–सभी प्रकार के विज्ञानों का अध्ययन यथा रसायन शास्त्र, भौतिक शास्त्र, नक्षत्र विद्या यान्त्रिकी, वनस्पति शास्त्र, जीव शास्त्र, शरीर व स्वास्थ्य विज्ञान, अर्थशास्त्र, गणित, भूगोल, इतिहास, नागरिक शास्त्र, क्षत्रियों के लिए धनुर्विद्या, मन तथा बुद्धि द्वारा प्राप्त अनुभवात्मक ज्ञान और ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त प्रत्यक्ष ज्ञान, सभी प्रयोगात्मक व अवलोकन की दृष्टि से मान्य हैं। साथ ही साथ सभी भाषाओं, कला व साहित्य के ज्ञान की भी अपेक्षा की गई है।

गीता में पुरूषार्थ चतुष्टय–इन दोनों विद्याओं के अतिरिक्त गीता में धर्म, अर्थ काम, मोक्ष को भी स्थान दिया गया है, अतः पाठ्यक्रम निर्धारण में छात्र के उपयुक्त पुरूषार्थो के अनुरूप ध्यान देना आवश्यक होता है गीता के 18वें अध्याय में चारों वर्णो के कर्मो का विवरण देते हुए, सफल जीवन जीने हेतु उपयुक्त कार्य करने की दिशा धारा मिलती है। इसके अतिरिक्त छात्र की रूचि, बुद्धि, स्वभाव व वर्ण के अनुकूल शिक्षा देने का प्रावधान बताया गया है।

शिक्षण विधियाँ

दर्शनवादी विचारधारा के अनुरूप गीता में प्रश्नोत्तर विधि का खुलकर प्रयोग हुआ है। यह विधि प्रभावी विधि मानी गयी है। शिष्य अपने मन के सन्देह, प्रश्नों के रूप में प्रकट करता है, गुरू के सन्तोष प्रद उत्तर देता है, जिज्ञासाओं को शान्त करता है व जीवन के गूढ रहस्यों की परतें खोलकर रख देता है। प्रश्नोंत्तर द्वारा ज्ञान का आदान–प्रदान भगवदगीता की मूल शिक्षण विधि है।

वार्तालाप विधि व संवाद विधि का भी में विचारों के आदान–प्रदान हेतु प्रयोग हुआ है। कृष्ण द्वारा दिये गए उत्तरों पर पुनः प्रश्न उठते हैं। अर्जुन भी अपने विचार प्रस्तुत करता है। दोनों अपनी–अपनी बात कहने के लिए तर्क प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार तर्क विधि का भी गीता में काफी खुलकर प्रयोग हुआ है। जहाँ तक ज्ञान का प्रश्न है यह श्लोकों के माध्यम से मौखिक विधि द्वारा प्रभावशाली ढंग से दिया गया है।

अर्जुन को ज्ञान पाने हेतु पात्रता विकसित करने के लिए श्रीकृष्ण आत्म समर्पण के लिए भी कहते है। यह आदर्शवादी दर्शन की एक महत्त्वपूर्ण विधि है। शिष्य को गुरू के दिखलाए मार्ग पर चलना चाहिए, तभी वह सद्ज्ञान को प्राप्त कर सकेगा। इसी आत्म समर्पण विधि द्वारा अर्जुन ज्ञान पाने में सक्षम होकर कर्म करता हुआ जीवन में मोक्ष का अधिकारी बन सका।

मनोवैज्ञानिक दुष्टिकोण से देखने पर दो तथ्य शिक्षण हेतु के लिए अनिवार्य माने गये है।

(1) शिक्षण विधि सप्रयोजन होनी चाहिए।

(2) शिक्षण, छात्र की मानसिकता के अनुकूल हो, उसकी योग्यता के अनुरूप उसे सीखने के लिए उत्प्रेरित करना चाहिए।

गीता में शिक्षण विधि का स्वरूप

ज्ञानात्मक	भावात्मक	क्रियात्मक	प्रवृत्ति
ज्ञान–योग	भक्ति योग	कर्म योग	विधि
किशोरावस्था	उत्तरबाल्यावस्था	बाल्यावस्था	अवस्था

एक व्यक्ति के जीवन में विकास की विभिन्न प्रवृत्तियाँ अलग–अलग अवस्थाओं में प्रकट होती है। जैसे–बाल्यावस्था में खेल–खेल में विभिन्न क्रियाओं, अनुभवों व इन्द्रिय प्रशिक्षण के द्वार ज्ञान ग्रहण किया जाता है। यही ज्ञान उत्तरबाल्यावस्था में श्रद्धा पूर्वक, बिना शंका किए, शिक्षक को आदर्श मान कर, पूजा, अर्चना, कीर्तन, श्रवण, आत्मा निवेदन आदि नवधा भक्ति की विधियों द्वारा ग्रहण किया जाता है। किशोरावस्था में बालक तर्क विधि द्वारा, शंकाओं का विवेचन, विश्लेषण करके, श्रवण, मनन, निद्रिध्यान द्वारा ज्ञान को गहण करता है। इस प्रकार ज्ञान प्राप्ति के तीनों स्तर, ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक विभिन्न होते हुए भी एक दूसरे के पूरक है।

ऐसा ही ज्ञान भगवद्गीता में विभिन्न शिक्षण विधियों का प्रयोग करते हुए अर्जुन रूपी जीव को ब्रह्म ज्ञान देने हेतु किया गया है।

सरांश

कोई भी धर्म वास्तव में अनुशासन का ही एक रूप व साधन है। भगवदगीता भी एक धर्मग्रन्थ है। गीता के तीसरे अध्याय के चालीसवें श्लोक में श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते है। "इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, काम के सथान है इसलिए हे अर्जुन, मनुष्य इन्हें अपने वश में करे, यही अनुशासन है। "गीता में स्वानुशासन पर बल दिया गया है। स्वयं पर कठोर अनुशासन रखने से ही व्यक्ति रागद्वेश विमुक्त हो सकता है।

निरन्तर कर्म में रत रहना ही गीता के अनुसार संयम व अनुशासन है। इन्द्रियों को वश में किये हुए व्यक्ति को ही ईश्वर प्यार करता है। वही ईश्वर को प्राप्त कर सकता है।

वास्तव में भगवदगीता का ज्ञान मनुष्य रूपी जीव के पंचकोषों को जगाने, सँवारने ओर उन्नति करने हेतु एक उच्चस्तरीय गुरू मंत्र है। यह अन्नमय कोश प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश एवं आनन्दमय कोश के जागरण हेतु क्रमशः कर्म, भक्ति, ज्ञान, ध्यान एवं योग में प्रवृत कर मोक्षरूपी ज्ञान प्रदान करता है। इसी ज्ञान की महिमा उच्च स्तरीय दार्शनिकों को अरविन्द, गाँधी, विवेकानन्द, टैगोर, लोकमान्य तिलक एवं अन्य पाश्चात्य मनीषियों ने अपने जीवन में अपना कर संसार से ख्याति प्राप्त कर ली है। यह ज्ञान जीवन को सँवारने व मानवता से देवत्व के ओर ले जाने का मूल–मंत्र है। सम्पूर्ण जीवन में हम, मासलों के अनुसार अधिकतम समय प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु लगा देते है व सबसे कम समय आत्मानुभूति के लिए क्रियाशील हो सकेगा, अतना ही देवत्व को पाते हुए मोक्ष रूपी सफलता को पा सकेगा।

निष्कर्ष में यदि देखा जाए तो सर्वमान्य सत्य यही है कि गीता का दर्शन किसी काल विशेष अथवा वर्ग विशेष के लिए न होकर सर्वकालिक व सार्वदेशिक है। गीता में वर्णित उपदेश पहले भी मान्य थे, अब भी मान्य है व भविषय में भी मान्य होंगे। आज भारत ही नही, सब देशों में भगवद्गीता के भाष्य प्रचलित है। अर्न्देशीय स्तर पर ख्याति प्राप्त ग्रन्थ भगवद्गीता ही है। सत्य ही है कि जब–जब समाज में विश्रंखलता उत्पन्न होती है, तब–तब समाज के पुनर्गठन हेतु अवतार होता है। सामाजिक परिवर्तन एक निरन्तर चलनेवाली प्रक्रिया है। इस परिवर्तन में सुव्यवस्था बनाये रखने हेतु शिक्षक अथवा गुरू ही उत्तरदायी होता है, उसे ही सदैव एक उच्च स्तरीय भूमिका का निर्वाह करना होता है। वही एक अवतार रूप में समाज को राह दिखाता है।

भगवद्गीता जैसा ग्रन्थ, विश्व साहित्य में कदाचित् ही देखने को मिले। यही कारण है कि विश्व की अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ है। स्वतंत्रता संग्राम में जब बापू, बाल गंगाधर तिलक, नेहरू तथा अनेक मूर्धन्य स्वतंत्रता सैनानी जेलखानों में कैद कर लिये गए थे, पूरे भारतवर्ष में हाहाकार मचा था, ऐसे समय में पाश्चात्य देशों के बचचे तथा भारतीय स्कूलों के बच्चे "गीता" पर लेख लिख रहे थे। शिक्षक श्रीमदभागवद के आलोक को प्रसारित करने लगे थे। पूरे भारत में गीता गीता का सन्देश गूजने लगा था। हैरान होकर अंग्रेज अधिकारी ने एक

महत्वपूर्ण गोष्ठी में कहा था–"कौन है यह महिला 'गीता' इसे कैद कर लिया जाए।" तत्काल ही दूसरे व्यक्ति ने बताया कि महाशय यह कोई महिला नहीं, बल्कि यह तो हिन्दुओं का अत्यन्त पवित्र ग्रन्थ है। आशय यह है कि यह ग्रन्थ हिन्दू धर्म का आधार ग्रन्थ है। जिसमें तत्व विचार नीति–नियम, ब्रह्म–विद्या और योग शास्त्र निहित है। गीता का विचार सरल, स्पष्ट और प्रभावोंत्पादक हैं। औपनिदेषिक विचारों सक परिपूर्ण होते हुए भी इसकी शैली इतनी सरल और विश्लेषणात्मक है कि इसे साधारण मनुष्य को समझने में कठिनाई नहीं होती है।

अभ्यास प्रश्न

सन्दर्भ सूची–

1. पाण्डे, (डॉ) रा. श. उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आगराः अग्रवाल प्रकाशन.
2. सक्सेना, (डॉ) सरोज, शिक्षा के सामाजिक आधार, आगराः साहित्य प्रकाशन.
3. मित्तल, एम. एल. (2008) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, मेरठः इण्टरनेशनल पबिलिशिंग हाउस.
4. शर्मा, रा. ना0 व शर्मा, रा0 कु. (2006), शैक्षिक समाजशास्त्र, नई दिल्लीः एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटनर्स.
5. सलैक्स, (डॉ) शी. मै. (2008). शिक्षक के सामाजिक एवं दार्शनिक परिपेक्षय. नई दिल्लीः रजत प्रकाशन.

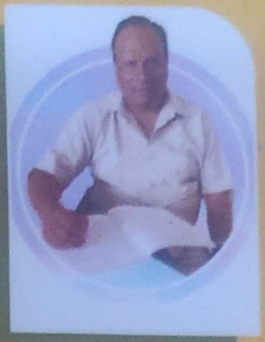

जीवन वृंत

नाम: संजय शर्मा 'वत्स'

जन्म :- 20 मई 1979, रुड़की, जिला-हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

पिता का नाम :- स्व० डॉ. यादवेन्द्र नाथ शर्मा

माता का नाम :- श्रीमती कौशल्या शर्मा

शिक्षा:- बी एस.सी.(बायो), परास्नातक (एम.ए.) (समाजशास्त्र, राजनीति विज्ञान, शिक्षा शास्त्र), बी.एड, विशिष्ट बी.टी.सी., पी.जी. डी. सी.ए. (मा. ला. पत्रकारिता वि.वि. भोपाल), आईजी डी. (बॉम्बे), संस्कृत संभाषण प्रवेशिका, व्यक्तित्व परिष्कार, सर्टीफिकेट कोर्स (देव संस्कृति वि.वि. हरिद्वार) वर्ष 2009 से उत्तराखण्ड शिक्षा विभाग में राजकीय शिक्षक।

साहित्यिक कार्य :-

प्रकाशन : देश-विदेश की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं यथा दैनिक जागरण, अजीत समाचार, पब्लिक इमोशन, पंजाब केसरी, शाह टाइम्स आदि प्रमुख दैनिक समाचार पत्रों व पत्रिकाओं में लेख, संस्मरण, समीक्षा और यात्रावृत्त आदि का प्रकाशन। पुस्तक दीवार पत्रिका (सं-महेश पुनेठा), पर्यावरण मित्र (सं- इं०शेखर यादव) भाषा शिक्षण (विविध विमर्श) सं०: प्रसाद राव जामि, , पर्यावरण अध्ययन (सं. प्रसाद राव जामि)में आलेख प्रकाशन।

प्रसारण : आकाशवाणी केन्द्र देहरादून से वार्ता का प्रसारण।

सम्पादित पुस्तक : 1. निवेधा : शिक्षा का इंद्रधनुष (आईएसबीएन युक्त पुस्तक का संपादन)2. उद्घोष : शिक्षा का नया सवेरा (आईएसबीएन युक्त पुस्तक का संपादन)

संस्थापक सदस्य :- स्वत : स्फूर्त नवाचारी शिक्षकों के स्वैच्छिक समूह "उदघोष: शिक्षा का नया सवेरा" का 23 मई, 2020 से संस्थापक सदस्य। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक बदलावों, आनन्ददायी शिक्षण एवं नवाचारों की बाबत देश भर में अभियान का नेतृत्व। अखिल भारतीय स्तर के शैक्षिक विमर्श एवं शिक्षक सम्मान समारोह का प्रतिवर्ष आयोजन बतौर कार्यक्रम संयोजक किया जाता हैं।

सम्मान एवं प्रशस्ति -

- **बेस्ट टीचर्स एवार्ड**-2017, अविष्कार फाऊंडेशन, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
- **राष्ट्र रत्न एवार्ड**-2017 प्रतिमा रक्षा सम्मान समिति, करनाल (हरि०)
- [illegible] (2018) विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर, बिहार (22वॉं [illegible]3-14 दिसंबर 2018)

मूल्य : १२००.०० रूपये

ISBN 978-93-49496-16-3

जे.टी.एस. पब्लिकेशन
बी-508 गली नं.17,विजय पार्क,दिल्ली -110053
मो. 08527460252,9990236819
ई मेल : jtspublications@gmail.com
ब्रांच ऑफिस : ए-9 नवीन इनक्लेव गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, पिन -201102